आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2015–2017

मासिक पत्रिका

अजायब ✵ बानी

वर्ष : तेरहवां | अंक : पाँचवां | सितम्बर-2015

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
सनबॉन्टर्न – अमेरिका

5 सतगुरु के नूरी चरन

(स्वामी जी महाराज की बानी)

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा
प्रेमियों के सवालों के जवाब

21 सावन दयालु ने रिमझिम लाई

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा
प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले संदेश

33 अमृत वेला

सतसंग के कार्यक्रमों की जानकारी

34 धन्य अजायब

संपादक–प्रेम प्रकाश छाबड़ा
099 50 55 66 71 (राजस्थान)
098 71 50 19 99 (दिल्ली)

विशेष सलाहकार–गुरमेल सिंह नौरिया
096 67 23 33 04
099 28 92 53 04

उप संपादक–नन्दनी

सहयोग–परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर – 335 039 जिला – श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

e-mail : dhanajaibs@gmail.com | Website :www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 सितम्बर 2015 –162– मूल्य – पाँच रुपये

अज शुभ दिहाड़ा ऐ भागाां नाल आया ऐ

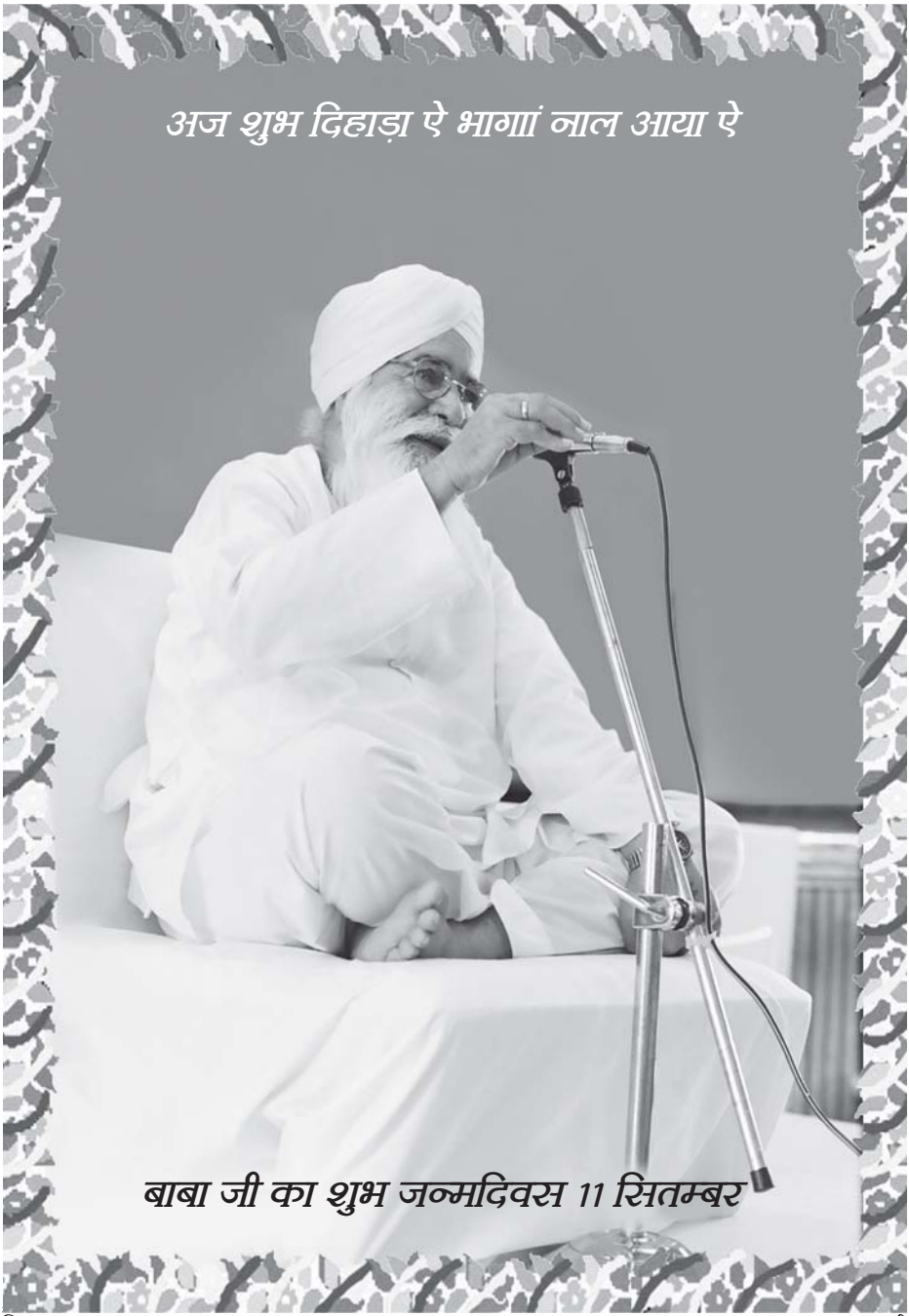

बाबा जी का शुभ जन्मदिवस 11 सितम्बर

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सतगुरु के नूरी चरन

स्वामी जी महाराज की बानी | DVD -582 | सॅनबॉर्न्टर्न - अमेरिका

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने गरीब आत्मा पर रहम किया अपना यश करने का मौका दिया है। आपके आगे स्वामी जी महाराज का शब्द रखा जा रहा है जिसमें आप बताएंगे कि हम सन्तों के चरनों में किस तरह नमस्कार करते हैं। सन्तों की मुराद अंदर नूरी चरनों से होती है अगर बाहर उनके नूरी चरन न मिलें तो अंदर **सतगुरु के नूरी चरन** मिलने का सवाल ही पैदा नहीं होता। तुलसी साहब कहते हैं:

छिन्न छिन्न सुरत संभाल लार दिरके रहो।
तन मन दर्पण मान सार सिर से गहो।
लगन लगे लख सार तब पाया।
हाँ रे सन्त चरन की धूड़ नूर दरसाया।।

आप प्यार से कहते हैं, ''आप सन्तों का दिया हुआ सिमरन बार-बार करें, अपने ध्यान को तीसरे तिल पर एकाग्र करें वहाँ **सतगुरु के नूरी चरन** प्रकट होंगे। सब सन्तों ने उन चरनों का जिक्र किया है, वहाँ तक पहुँचना शिष्य का फर्ज होता है।''

गुरु चरन बसे अब मन में। मैं सेऊं दम दम तन में।।

जब हम दोनों आँखों के दरम्यान ध्यान रखकर तीसरे तिल पर सिमरन करते हैं उस समय कभी गुरु का स्वरूप आता है तो कभी चला जाता है। जिस तरह हम ट्रेन में सफर करते हैं तो हमें इस तरह लगता है कि पेड़ दौड़ रहे हैं पेड़ उसी जगह खड़े होते हैं दौड़ती तो ट्रेन है। उसी तरह **सतगुरु के नूरी चरन** तीसरे तिल पर मौजूद होते हैं हमारा ध्यान कभी वहाँ जाता है कभी हट जाता है।

बहुत से प्रेमी यह भी शिकायत करते हैं कि हम वहाँ पर पहुँच तो जाते हैं लेकिन फिर नूरी चरन हमसे छूट जाते हैं। कई प्रेमी कहते हैं कि प्रकाश आता है लेकिन जल्दी चला जाता है ऐसा इसलिए है कि ध्यान एकाग्र नहीं होता। जब ध्यान एकाग्र नहीं होता तो तीसरे तिल पर जाकर इकट्ठा भी नहीं होता कभी स्वरूप आता है तो कभी चला जाता है। जब हम सूरज, चन्द्रमा, सितारे पार कर लेते हैं तो वे नूरी चरन हमारे अंदर मौजूद हो जाते हैं फिर वही स्वरूप उजाड़ो, पहाड़ों, जगलों में सेवक के साथ रहता है।

फिर प्रीत लगी घट धुन में। चढ़ पहुंची पहिली सुन में।

जब ध्यान तीसरे तिल पर एकाग्र हो जाता है तब अंदर जाकर गुरु के नूरी स्वरूप के साथ मीठी-मीठी, प्यारी-प्यारी बातें होती हैं। आत्मा के अंदर खुशी पैदा होती है, आत्मा अंदर ही शब्द गुरु के साथ बात करती है खुशी महसूस करती है। जब तीसरे तिल पर गुरु के साथ मीठी प्यारी बातें होती हैं तब गुरु आत्मा को ऊपर ले जाता है फिर हमारा ध्यान भंग नहीं होता और न ही सिमरन की तार टूटती है। जब एक बार एकाग्र हो जाते हैं तो सोते-जागते उसी जगह रहते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

सोए जागे रहे उताणे, कहे कबीर हम वही ठिकाणे।

अब सील क्षमा मन छाई। गइ तपन काम दुखदाई।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''मन हमें दिन-रात हिरन की तरह भटकाता है। तन के अंदर काम की तपिश है, काम की तपिश होने की वजह से ही इंसान अपना धर्म नहीं पहचानता। कामी बेशर्म हो जाता है उसे नज़दीक खड़ा हुआ आदमी दिखाई नहीं देता। काम की तपिश इतनी जबरदस्त है कि इंसान रिश्ता ही भूल

जाता है। जब अंदर **सतगुरु के नूरी चरन** प्रकट हो जाते हैं तो काम चला जाता है इसकी जगह शील आ जाता है।''

फिर क्रोध लोभ भी भागे, अंहकार मोह सब त्यागे।

क्रोध तत्काल का पागलपन होता है। आप क्रोधियों की हालत देखें! जब क्रोध आता है तो उन्हें पता ही नहीं लगता कि वे अपनी जुबान से क्या बोल रहे हैं। क्रोधी खुद तो तपते हैं अपने आस-पास वालों को भी तपने में लगा देते हैं। क्रोध चला जाता है क्षमा आ जाती है। मोह चला जाता है विवेक आ जाता है। काल की ताकतें काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंहकार निकल जाते हैं और दयाल की ताकतें अंदर घर कर लेती हैं।

प्यारे मित्रों! हर किसी की जिंदगी में ऐसे वाक्या होते हैं। इन ताकतों को बस में कर लेना खाला जी का बाड़ा नहीं। बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों ने तप-अभ्यास किया घर-बार छोड़कर जंगलो-पहाड़ो में गए लेकिन वहाँ भी काम, क्रोध ने उनका पीछा नहीं छोड़ा अगर हम यह कहे कि हम बाहर थोड़ा बहुत लेक्चर देकर चार किताबें पढ़कर गुणी ज्ञानी बनकर इनसे पीछा छुड़वा लेंगे तो यह हम अपने आपको धोखा दे रहे हैं।

प्यारेयो! अगर हम हठ कर्म करके स्थूल दुनिया से पीछा छुड़वा भी लें तो जब हम अंदर सूक्ष्म दुनिया में जाते हैं वहाँ भी सूक्ष्म भोग है, वहाँ सूक्ष्म भोगों का बहुत जोर होता है। दुर्वासा ऋषि की स्वर्गों तक पहुँच थी, वह सूक्ष्म देश में जाता था लेकिन सूक्ष्म देश में उर्वशी परी ने उसे ठग लिया।

मैं बताया करता हूँ कि काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की स्थूल गाँठ हमारी आँखों के पीछे सूक्ष्म त्रिकुटी में है। जब तक

हम पारब्रह्म में नहीं पहुँच जाते अपनी आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीनों पर्दे नहीं उतारते तब तक इनसे बचने का सवाल ही पैदा नहीं होता।

धुन पाँच शब्द घट जागी, मन हुआ सहज बैरागी।

आप प्यार से कहते हैं, ''ये पांचो ताकतें एक-एक करके निकल जाती हैं काम कहता है कि मैं जा रहा हूँ अब यहाँ मेरा गुजारा नहीं। जब घर का मालिक सोया होता है तो लुटेरे घर के अंदर घुस जाते हैं फिर यह उन लुटेरों पर निर्भर है कि वे इसके अंदर क्या छोड़ते हैं क्या लेकर जाते हैं? अगर लुटेरों को अंदर जाने का मौका मिल जाए तो वे घर के अंदर सामान क्यों छोड़ेंगे? जब घर का मालिक जाग जाता है अपनी आई पर आ जाता है उनकी मौजूदगी बर्दाशत नहीं करता तब सारे लुटेरे दौड़ जाते हैं।''

ऊपर से घंटे की धुन आ रही है उस धुन को सुनकर मन के अंदर वैराग्य पैदा हो जाता है। वह वैराग्य दुनिया के दिखावे के लिए नहीं होता। कहीं दिल में यह ख्याल हो कि बहुत से लोग घर-बार, पत्नी, बच्चे छोड़कर बैरागी बन जाते हैं फिर बाहर जाकर चेले बना लेते हैं डेरो के लिए लड़ते-झगड़ते हैं। बाहर भी हर चीज की जरूरत पड़ती है हम जिन चीजों का वैराग्य करके घर से निकले थे फिर उन्हीं चीजों के लिए लड़ाई-झगड़े करते हैं।

प्यारेयो! हमारे इलाके का एक ताजा ही वाक्या है कि पंजाब से एक साधु घर-बार छोड़कर इस इलाके में आकर रहने लगा। वह गले में बोरी डालकर रखता था, उसने कपड़े पहनने भी छोड़ दिए। वह अपने हाथ से माया नहीं लेता था। जो कोई उसे माया देना चाहता वह उससे कहता कि बोरी के नीचे रख दें या किसी सेवक से कह देता कि माया ले ले।

बाबा सावन सिंह जी कहा करते थे, ''बिमारी तो वही रहती है कि माया हाथ से नहीं पकड़ी बोरी के नीचे रखने के लिए कह दिया या किसी सेवक को लेने के लिए कह दिया। लेने-देने का तो वही सवाल रहता है।''

वहाँ बहुत माया इकट्ठी हो गई बहुत भारी जायदाद बन गई। उस साधु ने दो चेले रखे हुए थे। जब साधु ने चोला छोड़ा तो दोनों चेले उस जायदाद के वारिस बनने के लिए आपस में झगड़ने लगे। अब सरकार ने उस जायदाद पर कब्जा किया हुआ है। प्यारेयो! वह साधु गले में बोरी डालकर रखता था और चेलो को भी यही उपदेश देता था लेकिन बाहर के दिखावे का वैराग्य यही करता है।

हमारी आत्मा उस 'शब्द' को सुनती है तो मन के अंदर सच्चा वैराग्य पैदा होता है। मन लज्जत का आशिक है जब तक इसे ऊँची से ऊँची सुच्ची लज्जत नहीं मिलती तब तक यह दुनिया के खट्टे-मीठे रसो को छोड़ने के लिए तैयार नहीं होता। हम किसी भिखारी से उसकी मांगी हुई भीख को छोड़ने के लिए कहें तो वह छोड़ने के लिए तैयार नहीं होगा अगर हम उसके हाथ में डॉलर या नोट रख दें तो कहने की जरूरत नहीं वह अपनी मुट्ठी ढ़ीली कर देगा।

हमारे मन की भी यही हालत है। हम जब तक इसे ऊँची से ऊँची सुच्ची 'शब्द-नाम' की लज्जत नहीं देते तब तक यह दुनिया के रस विषय-विकारों को छोड़ने के लिए तैयार नहीं होता।

गुरु किरपा सूर उगाना। अब हुआ जगत बेगाना।।

गुरु बाहर भी कृपा करता है नाम देता है सतसंग सुनाता है सतसंग में हमारी कमियां और अंदर जाने का रास्ता बताता है। लेकिन जब हम घंटे की धुन सुनकर अंदर जाते हैं सूरज, चंद्रमा

तक पहुँच जाते हैं फिर यह देश पराया लगने लग जाता है अपने आप ही इससे हमारा लगाव खत्म हो जाता है।

घट बैठी तारी लाई। बाहर की किरिया दूर बहाई।।

जब सूरज, चन्द्रमा पैदा हो जाते है अंदर समाधि लग जाती है फिर हम बाहर जो कर्मकांड करते हैं उन्हें भूल जाते हैं। बुल्लेशाह ने अपने गुरु के आगे फरियाद की, ''मुझे हर रोज पांच बार नमाज पढ़ने की आदत है, मैं रोजाना मस्जिद में जाता हूँ। अब आप मुझे बताएं कि मैं कलमें की कमाई करुं या नमाज पढूं?''

ईनायत शाह ने कहा, ''तू रोजाना जो कर्मकांड करता है वह कर।'' सन्त-महात्मा किसी पर कोई कानून नहीं लगाते वे कहते हैं कि हम आपको जो युक्ति बताते हैं आप वह करें फिर देखें! इसमें कोई रस है या कर्मकांड में रस है? आप अपने आप ही भेद निकाल लेंगे। बुल्लेशाह ने बाहर के कर्मकांड के साथ अंदर कलमें की कमाई की अंदर रस आया तो वह ईनायत शाह के पास गया। ईनायत शाह ने पूछा, ''क्यों भाई! नमाज पढ़ता है रोज़े रखता है?'' बुल्लेशाह ने कहाः

नमाज पढ़ा के तैं वल वेखा, मैंनू काबा भुल्ल गया ई।

तू अंदर इतना सुंदर और प्यारा लगता है कि मैं बयान नहीं कर सकता। अब तू ही बता कि मैं नमाज पढूं या तेरी तरफ देखूं? अगर मैं नमाज के लिए खड़ा होता हूँ तो मेरा ध्यान तेरी तरफ से टूट जाता है। मुझे मस्जिद जाना याद ही नहीं क्योंकि मेरे लिए सच्चा काबा तू ही है।

भट नमाजा चिक्कड़ रोजे कलमें दे सिर स्याही।
बुल्ले ने श्यो अंदरो पाया ते भुल्ली फिरे लुकाई।।

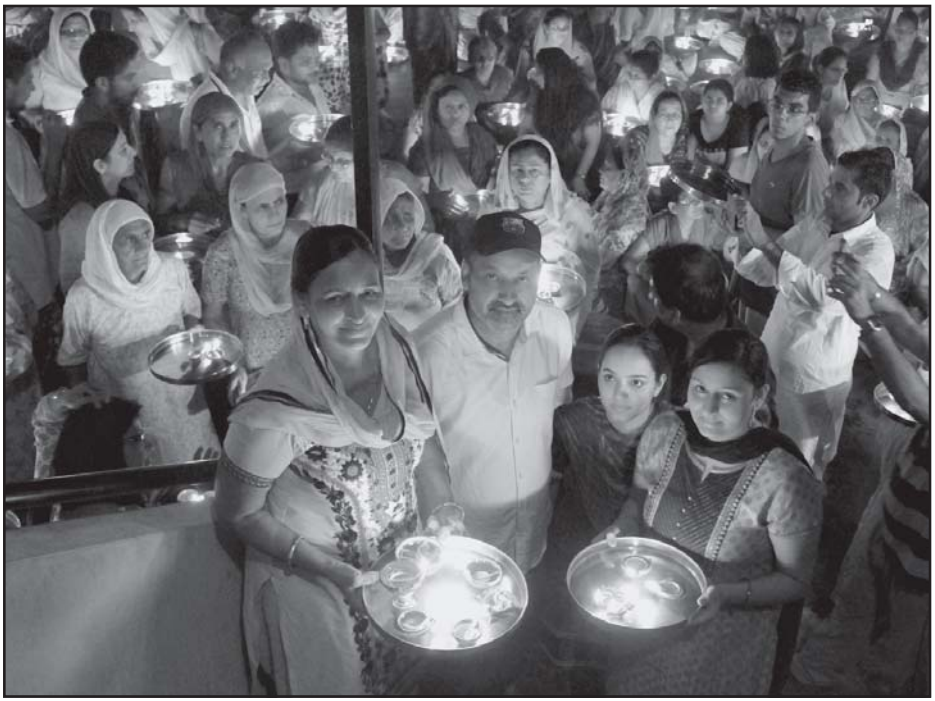

गुरु अद्‌भुत सुख दिखलाया। क्या महिमा जाय न गाया।।

सच तो यह है कि हम जब तक स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीनों पर्दे उतारकर पारब्रह्म में नहीं पहुँचते तब तक हमें सच्चे सुख और सच्ची शान्ति का पता नहीं लगता और न ही हमें गुरु की कद्र होती है। हमें दसवें द्वार में पहुँचकर ही पता लगता है कि गुरु क्या ताकत है और गुरु क्या सुख देता है। वहाँ पहुँचकर पता लगता है कि गुरु किस तरह आत्मा को अद्‌भुत सुख और शान्ति देता है। इससे नीचे-नीचे कभी हमारे अंदर प्यार आ जाता है तो कभी खुष्की आ जाती है। अगर किसी ने कह दिया कि यह महात्मा अच्छा है तो हमारे अंदर यकीन आ जाता है अगर किसी ने कह दिया कि यह महात्मा ठग है तो हमारा यकीन टूट जाता है।

यहाँ पहुँची हुई आत्मा कहती है कि मुझे गुरु ने जो सुख और शान्ति दी है मेरे पास जुबान नहीं कि मैं उसकी महिमा बयान कर सकूँ। वहाँ पहुँची हुई आत्मा की हालत यह होती है जिस तरह गूंगा गुड़ तो खा लेता है लेकिन गुड़ का स्वाद बयान नहीं कर सकता। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

कित मुख गुरु सलाहिए गुरु करण कारण समरथ।

जग जीव अभागी सारे। नर देही योंही हारे।।

वहाँ पहुँचकर आत्मा के अंदर दर्द पैदा होता है कि हम अभागे जीव हैं जो यहाँ नहीं पहुँचते। परमात्मा ने तो इंसान का जामा अपनी भक्ति के लिए दिया है लेकिन हम अंदर जाकर भक्ति करने की बजाय लम्बी-लम्बी यात्राएं करते हैं कभी किसी तीर्थ पर जाते हैं तो कभी किसी तीर्थ पर जाते हैं।

मैंने भी अपनी जिंदगी में लंबी-लंबी यात्राएं की हैं कभी किसी तीर्थ पर गया तो कभी किसी तीर्थ पर गया। जब बाबा बिशनदास जी से मिले आपने 'दो-शब्द' का भेद दिया। उस महात्मा ने भेद ही नहीं दिया बल्कि बहुत कठिन तपस्या करवाई तभी परमात्मा कृपाल ने आकर दया की।

प्यारेयो! मैं बताया करता हूँ कि जब बाबा बिशनदास ने मुझसे घोर तपस्या करवाई तब सबसे पहले आपने मेरा खाना बिल्कुल कम कर दिया उसके बाद सिर्फ सब्जियां देने लगे फिर सब्जियां भी कम कर दी सब्जियों का पानी देने लगे फिर सब्जियों का पानी कम करके थोड़ा सा घी देने लगे फिर घी भी कम कर दिया सिर्फ नमक वाला पानी देने लगे। यह बाबा बिशनदास जी की दया थी कृपा थी।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''कुम्हार जिस घड़े को बनाता है उसके अंदर अपना हाथ भी रखता है।'' मैं बताया करता हूँ कि सन्तमत की पहली दो मंजिले काफी मुश्किल होती हैं क्योंकि इन मंजिलों में उतना कीमती जौहर नहीं होता जितना रस, खूबसूरती और शान्ति ऊपर जाकर मिलती है।

जब आत्मा के अंदर दर्द पैदा होता है तब आत्मा कहती है कि ये जीव अभागे हैं जबकि न घर-बार छोड़ना है, न बेटे-बेटियां छोड़नी है न कुछ खर्च ही करना है; ये पारब्रह्म में पहुँचकर सुख-शान्ति क्यों प्राप्त नहीं करते? गुरु की दया मुफ्त में ही मिलती है।

क्यों गुरु से प्रीत न करते। क्यों जम के किंकर रहते।।

आप कहते हैं कि हम दुनिया के सामान विषय-विकारों और मान-बड़ाई से कितना प्यार करते हैं लेकिन गुरु की प्रीत के बारे में सुस्त हो जाते हैं। गुरु से प्यार करने में कुछ खर्च नहीं होता। प्यारेयो! शीशे को जरूरत नहीं कि आप मुझे देखें इसी तरह गुरु को हमारे प्यार की जरूरत नहीं होती क्योंकि वह तो अपने गुरु के प्यार में मस्त होता है। जितना गुरु ने अपने गुरु के साथ प्यार किया होता है जब तक सेवक उतनी मश्क नहीं करता अपने आपको गुरु में जज्ब नहीं कर देता अपने आपको भूल नहीं जाता तब तक यह भी सच्चा सुख और सच्ची शान्ति प्राप्त नहीं कर सकता।

मैं किस से कहूं सुनाई। फिर अपना मन समझाई।।

सन्त किसे समझाएं? कोई सुनने के लिए तैयार नहीं बल्कि डंडे लेकर तैयार हो जाते हैं कि आप हमें यह उपदेश क्यों देते हैं?

तू गुरुमत दृढ़ कर भाई। अब छोड़ो तात पराई।।

आखिर में यहाँ पहुँची हुई आत्मा अपने मन को समझाती हैं कि अब दृढ़ होकर गुरुमत पर चलें और लोगों की चिन्ता छोड़ दें क्योंकि हम चिन्ता लेकर ही संसार में आते हैं। प्यारेयो! इंसानी जामा बहुत कीमती है आपको यह मौका बार-बार नहीं मिलेगा।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''ऊँचे भाग्य हों तो किसी सतसंगी घर में जन्म होता है और ऊँचे भाग्य हो तो बचपन में हमारा ख्याल परमात्मा की तरफ लग जाता है उससे भी अच्छा भाग्य हो तो जवानी में नाम मिल जाए हम परमात्मा की तरफ लग जाएं। जवानी में इंसान पाँच-छह घंटे या आठ घंटे तक रीढ़ की हड्डी सीधी रखकर अभ्यास कर सकता है। बुढ़ापे में अंग दुखने लग जाते हैं, सोचने की शक्ति कम हो जाती है।''

चल रह तू त्रिकुटी घाटी। चढ़ सुन्न शिखर की बाटी।।

अब आप कहते हैं, ''तू त्रिकुटी, ब्रह्म महासुन्न को छोड़कर भंवर गुफा का पर्दा तोड़कर अंदर चल।''

महासुन्न की तोड़ो टाटी। जा भँवरगुफा की हाटी।।
फिर सत्तपुरुष घर पाया। धुन बीना जाय बजाया।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''जब आत्मा महासुन्न भँवरगुफा का पर्दा उतार लेती है तब सतपुरुष के देश में चली जाती है, वहाँ इसके मन को बीन जैसी मीठी सुरीली आवाज सुनाई देती है। हर सन्त ने मीठी सुरीली आवाज का इशारा किया है। सन्तों ने हमें बाहर के साज के साथ तस्वीह देकर समझाया है लेकिन उसकी तस्वीह देने के लिए बाहर और कोई चीज है ही नहीं।''

सुनी अलख अगम की बतियाँ। शशि सूर खरब जहाँ थकियाँ।।

जब हिन्दुस्तान में अंग्रेजों का शासन था उस समय सबको खुलकर बोलने की इजाजत थी इसलिए स्वामी जी महाराज ने बहुत खुल्ला कलाम बयान किया है। गुरु नानकदेव जी और दसों गुरुओं के जमाने में मुगलों का राज्य था उस समय किसी को खुलकर बोलने की इजाजत नहीं थी।

मैं हमेशा ही गुरु ग्रंथ साहब की बानी सुनाया करता हूँ जिसमें किसी समाज की निन्दा, बुराई नहीं सिर्फ परमात्मा की महिमा गाई गई है। कुछ सामाजिक लोगों ने मुगल राजाओं को बहकाया कि गुरु ग्रंथ साहब में बुराई लिखी हुई है। पांच-छह बार गुरु ग्रन्थ साहब को मुगलों की कचहरी में तलब किया गया। किसी भी सन्त ने किसी समाज की बुराई नहीं की अगर सन्त ही निन्दा करेंगे तो हमें हटाएगा कौन?

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''आगे जाकर आत्मा ने अगम अलख की धुनें सुनी। आत्मा कहती है कि यहाँ एक सूरज है, सतपुरुष के दरबार में अरबों-खरबों सूरजों जैसा प्रकाश है।''

पिया परसे राधास्वामी। कुछ कहूं न पुरुष अनामी।।

आत्मा परमात्मा में मिल गई है। वहाँ आत्मा को जो सुख शान्ति मिलती है उसे वहाँ पहुँची हुई आत्माएं ही महसूस करती हैं, वे बाहर उसका कोई नमूना नहीं दे सकती।

मेरी आरत सब से न्यारी। कोइ समझेगी पिया प्यारी।।

आरती करने के लिए एक थाल में दीपक रखे जाते हैं। हम उस थाल को देवता ईष्ट के आगे खड़े होकर फेरते हैं वह थाल दो चार मिनट फेरकर एक तरफ रख दिया जाता है। मेरी आरती

आत्मा का परमात्मा से मिलना है, मैं परमात्मा में मिल गई हूँ। जो गुरुमुख प्यारी आत्मा यहाँ पहुँची है वह इस आरती को समझेगी। असली आरती आत्मा का परमात्मा में मिल जाना ही है। धन्ना भक्त ने यहाँ पहुँचकर कहा थाः

गोपाल तेरा आरता जो जन तुमरी भक्त करेंदा तिनके काज सँवारता।

यह भेद अथाह बखाना। बिन सन्त न कोई जाना।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''मैंने आपको जो भेद बताया है सिर्फ सन्त ही इसकी अगुवाही भरेगे। गुरु नानकदेव जी, कबीर साहब, दादू साहब, रविदास जी परमगति को प्राप्त हैं वे ही इसकी अगुवाही भरेंगे। सामाजिक लोगों को पता नहीं कि परमात्मा हमारे

अंदर है हमने किस तरह अंदर जाकर परमात्मा से मिलना है और परमात्मा से मिलकर क्या शान्ति आती है क्या प्राप्त होता है?''

करमी जीव जग के अंधे। सब फँसे काल के फँदे।

आप कहते हैं, ''कर्मकांडी लोग रीति-रिवाज ही जानते हैं। कर्मकांड करना पानी में मधानी चलाना है। पानी में मधानी चलाकर जितना मर्जी बिलो लें उसमें झाग ही आएगी मक्खन जब भी निकलेगा दूध में से ही निकलेगा।''

उनसे नहिं कहना चाहिये। मन गूढ़ छिपाये रहिये।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''आप मनमुखों से नाराजगी न लें, आप उन्हें कुछ मत कहें, इस गूढ़ मत को छिपाकर रखें।'' गुरु नानकदेव जी भी कहते हैं:

बिन ग्राहक गुण बेचिए तो गुण सहजो जाए।
गुण का ग्राहक जे मिले तो गुण लाख बिकाए।।

बहुत से लोग कहते हैं कि हमारे बाप-दादा कर्मकांड करते आए हैं हम इन्हें कैसे छोड़ सकते हैं? सोचकर देखें! अगर हमारे बाप-दादा को ज्ञान नहीं था या उन्हें कोई पूर्ण गुरु नहीं मिला या उनके ऐसे कर्म ही नहीं थे तो क्या हमने भी उसी राह पर जाना है?

मैं अपने पिता के बारे में बताया करता हूँ कि मेरे पिता बहुत कर्मकांडी थे। वह सुबह उठकर हाथ में गुटका लेकर जपजी साहब पढ़ते और नौकरों को गालियां भी निकालते रहते। मैं कई बार उनसे कहता कि परमात्मा आपका जपजी साहब मंजूर करेगा या आपकी गालियों को मंजूर करेगा?

प्यारेयो! आप यह सुनकर हँसेंगे अगर पंजाब में किसी की भैंस माघ के महीने में सूए तो उसे अपशगुन मानकर घर में नहीं

रखते जल्दी बेच देते हैं। इसी तरह हमारे घर में एक भैंस थी वह माघ के महीने में सूने वाली थी। एक पंडित ने मेरे पिता को उपाय बताया कि तू रोज माला फेरा कर तेरी भैंस माघ के महीने में नहीं सुऐगी अगले महीने में सुऐगी। मेरा पिता रोज माला फेरने लगा। माघ, फग्गण, जेठ और आषाढ़ भी निकल गया लेकिन भैंस सूई नहीं क्योंकि वह सूने वाली नहीं थी। एक दिन मेरे पिता ने कहा कि कहीं मैंने माला ज्यादा तो नहीं फेर ली? मैंने कहा, ''अब तू माला उल्टी फेर ले।'' कर्मकांडियों का यह हाल है अगर मैं भी उसी तरह करता तो गुरु के पास न जाता!

सुर्त शब्द कमाई करना। सुमिरन में तन मन देना।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''सुरत शब्द का अभ्यास सबसे उत्तम है। सतगुरु का दिया हुआ सिमरन तन-मन से करना है। मुक्ति के तीन साधन सिमरन, भजन और ध्यान हैं।''

गुरु दर्शन बहुत निरखना। धुन अनहद नित्त परखना।।
सतसंग की चाहत रखना। जब डौल बने तब करना।।

आप प्यार से कहते हैं, ''जैसे चकोर चन्द्रमा की तरफ देखता है उसी तरह हमने गुरु का दर्शन करना है। जब भी मौका बने दिल में सतसंग की चाह रखनी है। हमारे दिल में सतसंग की चाह होगी तो हम इस इच्छा को पूरा करने के लिए सतसंग में भी जाएंगे।''

उपदेश किया यह टीका। राधास्वामी नाम मैं सीखा।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''मैंने आपको सब ग्रंथों का सार बता दिया है। 'शब्द-नाम' की कमाई का होका दिया है। हमें शब्द-नाम की कमाई करके अपने जीवन को सफल बनाना चाहिए।''

***

23 जुलाई 1996

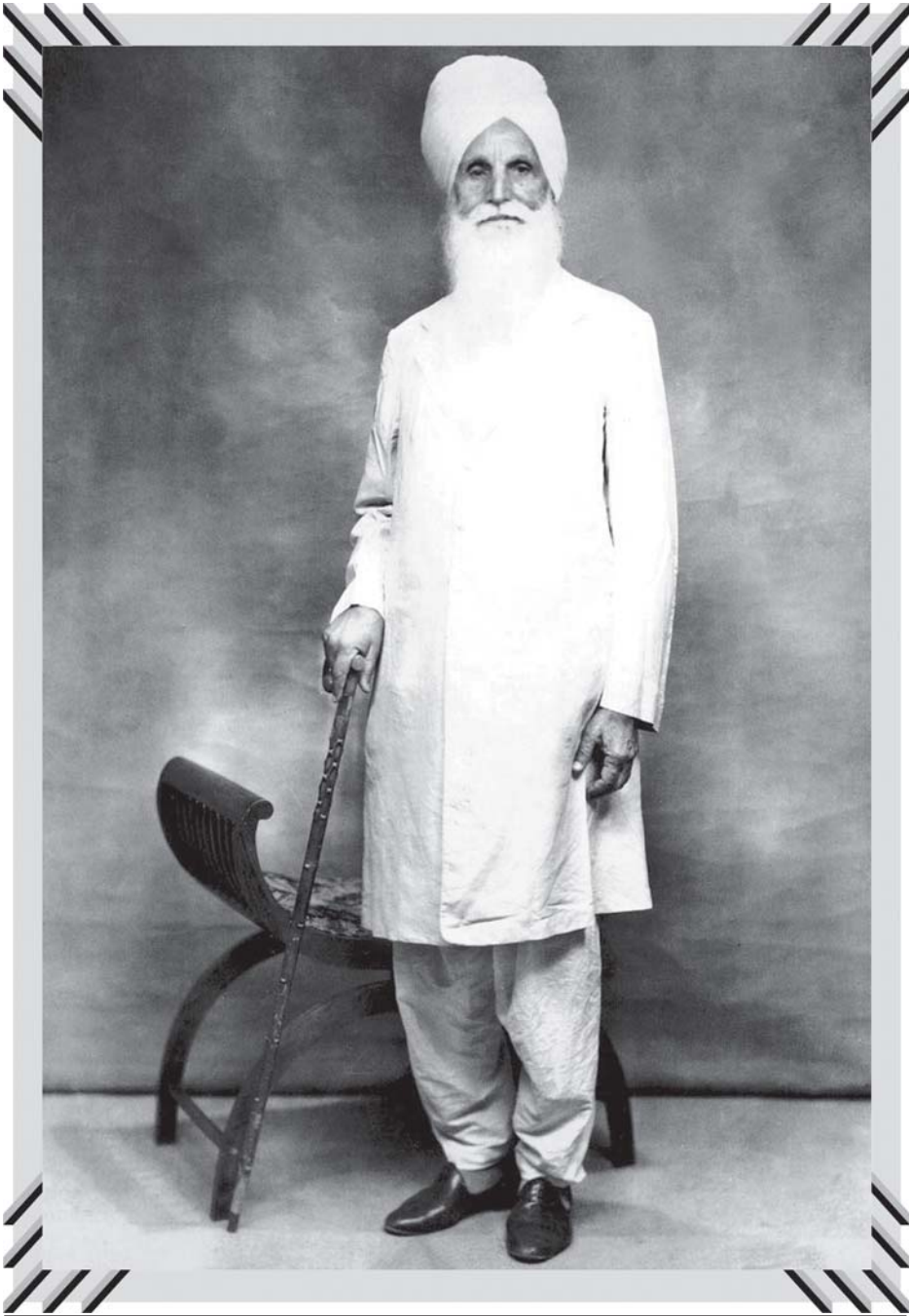

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सावन दयालु ने रिमझिम लाई

मुम्बई DVD-613

एक प्रेमीः- *प्यारे सन्त जी! दो दिन पहले एक प्रेमी ने यह भजन गाया था और यह भजन सन्तबानी मैगज़ीन में भी छपा है। आप इस भजन से बहुत प्रभावित हुए थे और आप इस भजन के बारे में कुछ कहना चाहते थे लेकिन अभ्यास का समय हो गया था इसलिए आप इस भजन के बारे में कुछ कह नहीं पाए थे। क्या आज आप इस भजन के बारे में कुछ कहना चाहेंगे?*

बाबा जीः- सबसे पहले गुरु परमात्मा सावन-कृपाल का धन्यवाद करते हैं जिसने हम गरीब आत्माओं की खातिर इंसान का चोला धारण किया, शान्ति का देश छोड़ा। जब तक हम न देखें शान्ति को बयान नहीं कर सकते; जो देखता है वही कह सकता हैः

महरम होय सो जाने साधो ऐसा देश हमारा।

कबीर साहब कहते हैं, ''जो वहाँ जाता है वही बता सकता है कि हम किस बाग के फल हैं, हमारे अंदर क्या मिठास है और हम किस तरह परमात्मा का हुक्म मानकर आपकी खातिर आए हैं?'' मैं उस दयालु गुरु का धन्यवाद करता हूँ जिसने अंदर ही प्रेरणा देकर यह भजन लिखवाया।

शुरु में पप्पू को इस भजन की ट्रांसलेशन करने में दिक्कत आई। जब पप्पू बार-बार सवाल करता था तो मुझे बहुत हँसी आती थी कि यह शादी-शुदा है। हमें शादी-शुदा जीवन से बहुत कुछ सीखने को मिलता है। गुरु शिष्य का प्यार भी आशिक-माशूक वाला होता है बेशक यह प्यार का पौधा गुरु ही सेवक के अंदर लगाता है। गुरु के लिए दूर और नज़दीक का फर्क नहीं पड़ता।

सेवक उसकी मश्क करता है चाहे आप इसे अभ्यास या मश्क कुछ भी कह लें। बार-बार किसी चीज को याद करें तो उसके साथ हमारा मोह और प्यार हो जाता है। इतना प्यार हो जाता है तो दिल करता है कि मैं उसकी तरफ देखता ही रहूँ फिर भी आँखों को तसल्ली नहीं होती।

किसी महात्मा ने परमात्मा के साथ प्यार करना इस तरह बयान किया है जैसे बाप-बेटे का रिश्ता है, इसमें बाप-बेटे को जोड़ने वाली कड़ी प्यार ही है। ज्यादातर महात्माओं ने मियाँ-बीवी के रिश्ते को बयान किया है कि मियाँ-बीवी को जोड़ने वाली कड़ी प्यार ही है। महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जिंदगी में शादी एक बार ही होती है, मरकर ही अलग हो तो अच्छा है।'' पूर्व या पश्चिम के सभी महात्माओं ने तलाक को बुरा कहा है। तलाक के बाद हम जो कुछ भी करते हैं उसे महात्माओं ने व्याभिचार कहा है।

परमात्मा कृपाल पच्चीस साल यही कहते रहे, ''रूहानियत लिखने का नहीं प्यार का विषय है, आँख ही आँख को देती है।'' आप एक भजन में पढ़ते हैं:

ओ अक्ल के अंधे देख जरा तैनूं, सतगुरु दित्तियां अक्खियां ने।

हमारे अंदर वह आँख भी गुरु ही बनाता है। प्यार को ग्रहण करने वाली दात उसी की होती है। मैं पप्पू की बात सुनकर इसलिए हँस रहा था कि शादी-शुदा जिंदगी में मियाँ-बीवी को बाँधने वाली आँखे ही होती हैं।

हिन्दुस्तान में खासकर पंजाब के इलाके में साल चैत्र के महीने से शुरू होता है। बैसाख, जेठ, आषाढ़ बहुत तपिश के महीने होते हैं। सावन के महीने में बारिश होती है, बारिश होने पर बूंदे बरसती रहती हैं; हर तरफ ठंड हो जाती है।

महाराज सावन सिंह जी का जन्म सावन के महीने में हुआ। आपके दादा ने इस महीने की महानता को मुख्य रखते हुए आपका नाम सावन सिंह रख दिया। उस समय हमारे प्रान्त में कई साल से अकाल पड़ रहा था। लोगों को खाने के लिए अन्न की दिक्कत थी और जानवरों को खाने के लिए चारा भी नहीं मिलता था। उस समय लोगों ने घास-फूँस इकट्ठा करके खाया और घास-फूँस को इस तरह संभालकर रखा जिस तरह गेहूँ को संभालकर रखते हैं।

आज आपको वहाँ जो हरियाली नजर आती है यह पहले नहीं थी क्योंकि वहाँ नहरे नहीं थी। अब नहरों से सारा इलाका हरा-भरा है। प्यारेयो! जब महाराज सावन सिंह जी का संसार में आगमन हुआ उस वक्त प्रान्त में बहुत बारिश हुई जिससे अन्न-धन बहुत ज्यादा हुआ। हर एक को खाने के लिए अन्न और पशुओं को चारा मिला। फल भी खूब पैदा हुए। उस समय के बेसतसंगी लोग उस समय को अभी भी याद करते हैं। उस भजन की टेक यह हैः

सावन दयालु ने, रिमझिम लाई, तूं मौसम रंगीले च, आ के तां देख।

जब बारिश हो जाती है उस समय आसमान में कई किस्म के रंग दिखाई देते हैं जिसे इंद्रधनुष कहते हैं। पंजाबी में इसे माता की पींघ भी कहते हैं। इसलिए कहा गया हैः

अम्बरां ते पींघा ने, सत-सत रंगियां, तू प्यारां दी पींघ, चढ़ा के तां देख।

हे प्यारे सावन! कई रंगों की सुहावनी पींघे हैं। तू एक बार मेरी आत्मा के साथ, मेरे साथ पींघ चढ़ाकर तो देख! पंजाब में आमतौर पर सावन के महीने में लड़कियां मायके में मिलने के लिए आती हैं। दो सहेलियां जिनका आपस में अति प्यार होता है वे मिलकर झूला झूलती हैं।

जब गुरु और शिष्य का प्यार होता है तो शिष्य भी चाहता है कि मैं किसी न किसी तरह नाम के जहाज में बैठकर सैर-सपाटा करूं। गुरु के साथ प्यार का झूला झूलूं। शिष्य के दिल के अंदर हमेशा ही ऐसी उमंगे उठती रहती है।

मैं अपनी जिंदगी का वाक्या बताया करता हूँ कि महाराज जी ऐसी बातों से खुश नहीं होते थे फिर भी सेवक की आदत होती है सेवक कई बार आदत से मजबूर भी हो जाता है। एक बार आप बाहर घूम रहे थे। मैंने चोरी से आपके पैरो की मिट्टी उठा ली। महाराज जी ने कहा, ''मैं इन बातों से खुश नहीं होता। अब तू इस मिट्टी को ही माथा टेकता रहेगा।'' मुझे पहले से ही कविता बोलने की आदत थी मैंने प्यार भरी छोटी सी दो लाइनें बोलीः

तेरी सजरी पैर दा रेता, चुक चुक ला वां हिक नूं।
प्यारेया तेरे पंज शब्दां ने मैनूं तारया।।

अब मैं काफी रूका हुआ हूँ, अब पहले जैसी सेहत नहीं है। कैन्ट और पप्पू ने भी कहा है कि अब आप बस करें। यह सच है कि सेवक अपने गुरु की दी हुई चीज़ को संभालकर रखता है।

महाराज सावन सिंह जी को खेती-बाड़ी से बहुत प्यार था आप एक सफल किसान थे। एक बार हम सेवादार खेत में काम कर रहे थे। आप अपने हाथों से सेवादारों को खेत में आकर प्रशादे देते थे। जब आप खेत में प्रशादे देने आए तो वहाँ कोई कुर्सी नहीं थी मेरे पास एक चादर थी मैंने वह चादर आपके नीचे बिछा दी। वह चादर कोई खास कीमती नहीं थी एक साधारण सा ही कपड़ा है।

जब उनका ही रूप परमात्मा कृपाल मेरे घर आए, मैंने उनके नीचे भी वही चादर बिछा दी। उस चादर को देखकर महाराज कृपाल हँस पड़े, उनकी वही जाने! महाराज कृपाल ने उस चादर को अपने माथे पर लगाया। मैंने अभी भी वह चादर प्रशादी की तरह बहुत संभालकर अपने पास रखी हुई है कि इस चादर के ऊपर परमात्मा के दो रूपों ने हाथ लगाए हैं। प्यारेयो! गुरु की चीज़ की वही कद्र करेगा जिसके ऊपर गुरु की कृपा है, जो गुरु को समझता है।

जब गुरु तेगबहादुर साहब पंजाब से पटना (बिहार) को जाने लगे तब रास्ते में काशी गए। कबीर साहब ने काशी में नाम का प्रचार किया था। कबीर साहब ने जिस लकड़ी पर बैठकर ताना बुना था आप वह लकड़ी वहाँ से उठाकर ले गए। काशी और पटना में काफी दूरी है। उन दिनों ट्रेने या बसें नहीं थी। रास्ते में सेवकों ने आपसे कहा कि आपने ये बोझ क्यों उठाया हुआ है आप यह चीज़ हमें पकड़ा दें। उस समय गुरु साहब ने हँसकर कहा, ''यह बोझ मुझे ही उठाना है, यह वह चीज़ है जिस पर बैठकर किसी समय

कुलमालिक ने अपनी रोजी-रोटी का धंधा चलाया था।'' अभी भी सिक्खों ने पटना में उन चीजों को संभालकर रखा हुआ है।

मैं पलकां च रख लां, छुपा के तैनूं, तू दिल वाले वेहड़े च, आ के तां देख।

इन आँखो के ऊपर पलके हैं जो ऊपर-नीचे होती हैं। ये पलकें देखने वाली नज़र की हिफाज़त के लिए हैं। कबीर साहब ने भी इनकी महिमा की है:

जब आंवे तू आँख में आँख झाँप में लूं।
न मैं देखूं और को न तुझे देखन दूं।।

सेवक गुरु के आगे यही फरियाद करता है कि तू एक बार मेरे अंदर आकर देख! न मैं किसी की तरफ देखूं और न तुझे किसी की तरफ देखने दूं।

इस बार जब मैं केलगिरी गया वहाँ एक मियाँ-बीवी मुझसे मिलने के लिए आए। मियाँ मुझे अपनी तरफ ज्यादा खींच रहा था। बीवी को महसूस हुआ कि बाबा जी इस आदमी से ज्यादा प्यार करते हैं और मुझे कम प्यार करते हैं। आपको पता है जिसने दिल से दिल की राह बना ली हो। फिर वह बेचारी अकेली आई उसने मुझसे कहा , ''मुझे यह महसूस हो रहा है कि आप मेरे पति को मुझसे ज्यादा प्यार करते हैं।'' मैंने हँसकर कहा, ''ऐसा नहीं है।'' वे दोनों यहाँ भी बैठे हैं।

कई मियां-बीवी में यही परेशानी हो जाती है कि किधर देखते हो। जो आंख में छुपाकर रख लेते हैं वे उसे आंख से बाहर निकलने ही नहीं देते। ऐसे ही न गुरु शिष्य को आँखों से निकलने देता है और न ही शिष्य गुरु को आँखो से निकलने देता है, यह तो प्यार का खेल है। यह गुरु शिष्य के प्यार की कड़ी है।

जब मैं केलगिरी से फार्म हाउस की तरफ जाने लगा तो वही प्रेमी मेरी ड्राईविंग कर रहा था। मुझे उसकी आदत का पता था वह आगे देखने की बजाय मेरी तरफ देखने लगा। मैंने उससे कहा कि मैं तेरी आदत को जानता हूँ, तू सीधा देख नहीं तो गाड़ी किसी में मार देगा। मैंने उसे मेरी तरफ देखने से मना किया।

कोयलां दे गीतां दी, सुर नूं समझ के, तूं इक गीत प्यारां दा, गा के तां देख।

कोयल की आवाज बहुत मीठी मानी गई है। जिस गायक की आवाज ज्यादा मीठी, प्यारी हो उस गायक को इलाके की कोयल कहकर बयान करते हैं। सेवक कहता है, ''तू कोयल के गीतों की सुर को समझ ले, तू मेरे साथ प्यार का एक गीत गाकर तो देख।'' मुझे भजन बोलने का बहुत शौक था और मेरी आवाज में भी बहुत रस था। कई बार जब मेरा दिल प्यार से भरा होता था तो मैं भजन बोलकर अपने गुरुदेव की आँखो से आँसू निकलवा देता था। महाराज जी हर कड़ी के साथ इस तरह सिर हिलाते या अंगुली से इशारा करते थे कि यह ठीक है।

शुरू-शुरू में जब मैं अमेरिका गया उस समय मैंने कई भजन बोले। मुझे अमेरिका के कई कलाकार भी मिले जिन्होंने कहा कि पंजाब से अपने आपको कोयल कहलवाने वाले कई कलाकार यहाँ आते हैं वे सारे नाक से ही बोलते हैं लेकिन आपकी आवाज दिल से आती है। मैंने आखिरी भजन न्यूयार्क में बोला था। उसके बाद मेरा गला रुक ही गया। अब मैंने यह भजन लिखा है लेकिन इस भजन का गायक गुरमेल सिंह है और साथ देने वाला पप्पू है।

खुशी स्वर्गां दी, मिल जाऊ ऐत्थे, तूं जुल्फां दी छां हेठ, आ के तां देख।

हम कहते हैं कि गुरु भाग्य से मिलता है हमारा भी यह तजुर्बा है कि गुरु को भी शिष्य भाग्य से ही मिलता है इसलिए शिष्य

पहले बड़े प्यार से गुरु से सवाल करता है, ''लोग स्वर्ग की खातिर बिक जाते हैं प्राण त्याग देते हैं घर-बार दान कर देते हैं हाँलाकि उन्होंने स्वर्ग देखा नहीं होता?'' सेवक फिर कहता है कि तू मेरी जुल्फों की छाँव के नीचे आकर तो देख तुझे खुशी मिल जाएगी।

जब सेवक गुरु की आज्ञा मानकर भजन-सिमरन करता है तो गुरु को ऐसी खुशी स्वर्गों में भी नहीं मिलती जितनी खुशी उसे शिष्य को देखकर होती है। तब गुरु कहता है, ''शुक्र है एक तो पास हुआ।'' मैंने जिस जगह अभ्यास किया था, बहुत से प्रेमी उस जगह को देख चुके हैं। उस जगह के मुत्तलिक काफी कुछ छप भी चुका है। उस जगह तख्ती पर लिखकर रखा हुआ थाः

चलो सईयो रण वेखण चलिए जित्थे आशिक सूली चढ़दे।
चढ़दे चढ़दे करण कलोलां ते मौतों मूल न डरदे।।

मैं अपने गुरुदेव के सामने भी कुछ ऐसा कह लेता थाः

आशिक अजायब को समझे न कोई, जिवें देख देख के तपना।
लै के अग्ग पराए घर दी जिस फूँक लिया घर अपना।।

उस समय मेरे परिवार के लोग यही कहते थे कि कृपाल ने इसके सिर पर जादू कर दिया है। मेरे बड़े भाई के साथ उसके दो रिश्तेदार आए, उन्होंने कहा कि तुझे अमृतसर ले जाकर बिजली लगवा लाते हैं। मैंने कहा, ''जादू तो सिर चढ़कर बोल रहा है।'' ऐसा इसलिए था क्योंकि परमात्मा कृपाल ने प्यार की आग दी थी और मैंने उस प्यार को तीली लगाते हुए नहीं देखा था कि यह क्या रंग दिखाएगी? बुल्लेशाह कहते हैंः

काजी छोड़ कजाई जावण, जद इश्क तमाचा लावे।

बेशक बुल्लेशाह मस्जिद का मुल्ला था, उसे मानने वाले कितने ही लोग थे लेकिन जब ईश्क का तमाचा लगा तो वह सब कुछ

छोड़कर एक तरफ हो गया। जब अंदर ईश्क की आग भड़क उठती है तो रिश्तेदार, बहन-भाई ऐसे आशिक के साथ हमदर्दी दिखाते हैं उसे घर का कारोबार करने के लिए समझाते हैं।

जब मेरे उस बड़े भाई का अंत समय आया तो वह कहने लगा कि चार कसाई आ गए हैं फिर थोड़ी देर बाद कहने लगा कि मुझे उस हस्ती कृपाल ने छुड़वा लिया है। जब दूसरे भाईयों ने मुझे यह सब बताया तो मैंने हँसकर कहा, ''गुरु तो फिर भी दया करता है।'' उसकी मौत के बाद मेरे परिवार के लोग सतसंग में आने लगे हैं और 'नाम' भी लेकर गए हैं।

मैं भर-भर नैणा दे, जाम पिला दूं, तूं इक वारी नजरां, मिला के तां देख।

प्यारेयो! गुरु शिष्य को प्यार का रस देता है और शिष्य गुरु को प्यार का रस देता है अगर शिष्य गुरु पर आशिक है तो गुरु शिष्य पर करोड़ों दर्जे आशिक होता है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

नैण महंडे तरसदे कद पै सी दीदार।

भाई नंदलाल ने गुरु गोबिंद सिंह जी से यही कहा था:

तेरी ईक नजर है मेरी जिंदगी का सवाल है।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

नैंण न देखे साध से नैंण मुंद घालिए।

वे आंखे बंद कर देनी चाहिए जिन आँखों को गुरु का दर्शन नसीब नहीं होता।

मैं जीवन वी सारा तेरे, नाम लिखा दूं, तूं इक वारी मेरे नाल, ला के तां देख।

जब सच्चा प्यार जाग जाता है शिष्य अपना तन, मन, धन सब कुछ गुरु का समझता है। गुरु रामदास जी महाराज कहते हैं:

मात पिता सुत इस्तरी सब हूं ते प्यारा।

अब तू मुझे माता-पिता, बेटा-बेटी, औरत सबसे ज्यादा प्यारा लगता है। सबका समझाने का अपना-अपना तरीका होता है। महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जिस पाईप में ज्यादा सुराख हैं उसमें से धार कम निकलेगी अगर उस पाईप के सारे सुराख बंद कर दें तो धार बहुत जोर से निकलेगी।'' इसी तरह अगर हम सब तरफ से प्यार हटाकर एक गुरु से प्यार कर लें तो बहुत जबरदस्त प्यार उमड़ेगा। सेवक कहता है, ''तू एक बार मेरे साथ लगाकर तो देख! मैं अपना सारा ही जीवन तेरे नाम लिखवा दूंगा।''

मैं जब से इस वस्तु को ढूंढ रहा था तब मुझे सुरत भी नहीं थी। मैं यही कहा करता था कि मेरा कुछ खोया हुआ है, मुझे कब मिलेगा? मैं जब थोड़ा सा बड़ा हुआ और सिक्ख इतिहास के मुत्तलिक सुनने लगा तब मेरे दिल में ख्याल आया कि वे लोग कितने भाग्यशाली थे जो गुरु के चरणों में बैठते थे। अगर मुझे गुरु मिल गया तो मेरे बहुत ऊँचे भाग्य होंगे, क्या मुझे गुरु मिलेगा?

प्यारेयो! बचपन से चाहना थी, प्यार की धार एक तरफ ही चल रही थी। सेवक कहता है, ''तू एक बार मेरे साथ लगाकर तो देख! मैं अपने हाथों-पैरों के अगूंठे लगाकर तेरे नाम अपने जीवन की रजिस्ट्री करवा देता हूँ।'' आजकल का तो पता नहीं उस समय हिन्दुस्तान की आर्मी में कानून था कि जब कोई आर्मी में जाता था तो उससे पंजे लगवाए जाते थे और कहलवाया जाता था, ''दुश्मन पर हमला करने के लिए अफसर चाहे खुष्की के रास्ते भेजे चाहे समुद्र के रास्ते भेजे मैं जाऊंगा, चाहे मुझे अपनी जान भी क्यों न न्यौछावर करनी पड़ जाए!''

अमृत जल अज, अम्बरा चों बरसे, तूं इक वारी रीझ, लगा के तां देख।

ऊपर से प्यार की बूंदे आ रही हैं तू एक बार प्यार का घूँट भरकर तो देख! गुरु के प्यार में रस और मिठास है, यह प्यार सेवक की जिंदगी पलट देता है। प्यारेयो! शिष्य के प्यार में भी मिठास होती है, गुरु और शिष्य का रिश्ता बहुत गहरा होता है। जहाँ माता-पिता, बहन-भाई कोई मदद नहीं करता गुरु वहाँ भी पहुँचकर मदद करता है।

सावन महीने दी, मस्ती च आ के, तूं नजरां दे तीर, चला के तां देख।

मोर की आँखो से प्यार का आसूं गिरता है, मोरनी उस आँसू को चुगती है तो उसे बच्चा पैदा हो जाता है। सेवक कहता है कि तू एक बार सावन महीने की मस्ती में आकर मेरी तरफ नैनों के तीर चलाकर देख मेरी छाती तेरे आगे है मेरा सब कुछ ही तेरा है।

दाम बिना अजायब, हो गया तेरा, तूं इक वारी मैनूं, अजमा के तां देख।

गुरु सेवक से केवल भजन की ही उम्मीद रखता है। गुरु यह नहीं कहता कि तुम मेरे लिए तोहफे लेकर आओ, वह तो कहता है कि तुम मेरे लिए भजन लेकर आओ इसलिए अजायब कहता है, ''मैं बिना दाम के तेरा हो गया हूँ।'' शिष्य भी गुरु से कोई मुआवजा नहीं लेता। शिष्य यह नहीं कहता कि तू मेरी बीमारी, बेरोजगारी दूर कर। शिष्य जानता है कि सब कुछ गुरु के हुक्म से ही हो रहा है। जैसे कोई नौकरी करके मुआवजा मांगता है इसी तरह अगर सेवक गुरु से कुछ मांग रहा है तो वह प्यार नहीं गर्ज है। कबीर साहब कहते हैंः

गुरु लोभी सिख लालची दोनो खेलें दाव।

अगर गुरु सेवक के धन पर गुजारा करता है तो गुरु लोभी है। शिष्य यह सोचता है कि शायद किसी तरह से मेरा लालच पूरा हो जाए, ये दोनों दाँव खेल रहे हैं। पूर्ण सन्त-महात्मा अपने सेवक

से सिर्फ भजन की उम्मीद करते हैं और सच्चा सेवक भी कभी यह नहीं कहता कि गुरु ने मेरा यह काम नहीं किया। हमारी हजारों ही शिकायतें हैं कि गुरु ने मेरी बीमारी, बेरोजगारी दूर नहीं की अगर कोई फोड़ा-फुंसी ठीक नहीं होता तो हम कहते हैं कि छोड़ो गुरु को, जरा सोचें! ये गरज का प्यार है।

अजायब कहता है, ''मैं बिना दाम के तेरा हो गया हूँ, तू एक बार मुझे अज़मा कर तो देख।'' गुरु शिष्य की कहानी खत्म नहीं होती। कहीं आप सोचे! इन्होंने कहानी बयान कर दी है।

महाराज सावन सिंह जी ने पैंतालिस साल अपने गुरु की और परमात्मा कृपाल ने पच्चीस साल अपने गुरु की कहानियां सुनाई। इसी तरह गुरु नानकदेव जी से लेकर दस गुरुओं ने गुरुओं की कहानियां सुनाई; बड़े-बड़े ग्रंथ लिख दिए लेकिन ये कहानियां खत्म नहीं हुई। दिल में कहने के लिए बहुत कुछ है मैं उसकी क्या महिमा करूं? वह करण कारण है समर्थ है; वह आज भी हमारी रक्षा कर रहा है।

हमारे इलाके का एक सरदार केलीफोर्निया गया, वह सतसंगी नहीं था। वह किसी पश्चिमी भाई के साथ शम्स आश्रम सेनफ्रान्सिको सतसंग में चला गया। उसने शम्स आश्रम में प्रेमियों को यही भजन गाते हुए सुना। जब वह हिन्दुस्तान आया तो वह मुझसे मिलने आया और उसने कहा कि मुझे एक पश्चिमी भाई ने यह जानकारी दी मैंने वहाँ शम्स आश्रम में अपनी आँखों से देखा कि लोग परमात्मा कृपाल का कितना यश कर रहे हैं उनमें कितना प्यार है।

गुरु शिष्य का प्यार कभी खत्म नहीं होता, यह फूट-फूटकर बाहर आता है; जितना निकालोगे उतना और बाहर आएगा।

***

09 जनवरी 1993

अमृतवेला

सतगुरु प्यारे मेरी, ज़िंदगी सवार दे,
कर्मां दे मारे तेरे, दर ते पुकार दे, (2)

1. तेरे ते गुरुजी मेरा, राई रत्ती जोर ना,
तेरे बाजों दुनियां ते, मेरा कोई होर ना, (2)
सतगुरु प्यारे मेरी .....

2. शरण मैं तेरी आया, मैनूं ठुकराईं ना,
दुःख मैं बथेरे पाऐ, होर तड़फाईं ना, (2)
सतगुरु प्यारे मेरी .....

3. दुखां नाल तपया तूं, दिल मेरा ठार दे,
कर्मां दे मारे तेरे, दर ते पुकार दे, (2)
सतगुरु प्यारे मेरी .....

हाँ भई! बड़ा सुहावना मौका है, इंसानी जामा सच्चखंड पहुँचने की आखिरी सीढ़ी है अगर हम कोशिश करें तो अपने घर सच्चखंड पहुँच सकते हैं।

जब परमात्मा हमारे ऊपर मेहर करता है तो हमें प्रेरित करके अपने प्यारे सन्त-महात्माओं की संगत में ले आता है। सन्त-महात्मा मालिक के प्यारे जब हमारे ऊपर दया-मेहर करते हैं तो वे हमारी सुरत को 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ देते हैं। हम सन्त-सतगुरु की गोद में रूहानी तरक्की करते हैं।

आपने बाहर किसी आवाज की तरफ तवज्जो नहीं देनी हर व्यक्ति अपने काम में मस्त है, हम अपने काम में मस्त है। मन को बाहर भटकने नहीं देना तीसरे तिल पर एकाग्र करना है। मन को शान्त करना है, शान्त मन ही अभ्यास कर सकता है। अभ्यास को बोझ नहीं समझना प्रेम-प्यार से करना है। हाँ भई! बैठें।

***

धन्य अजायब

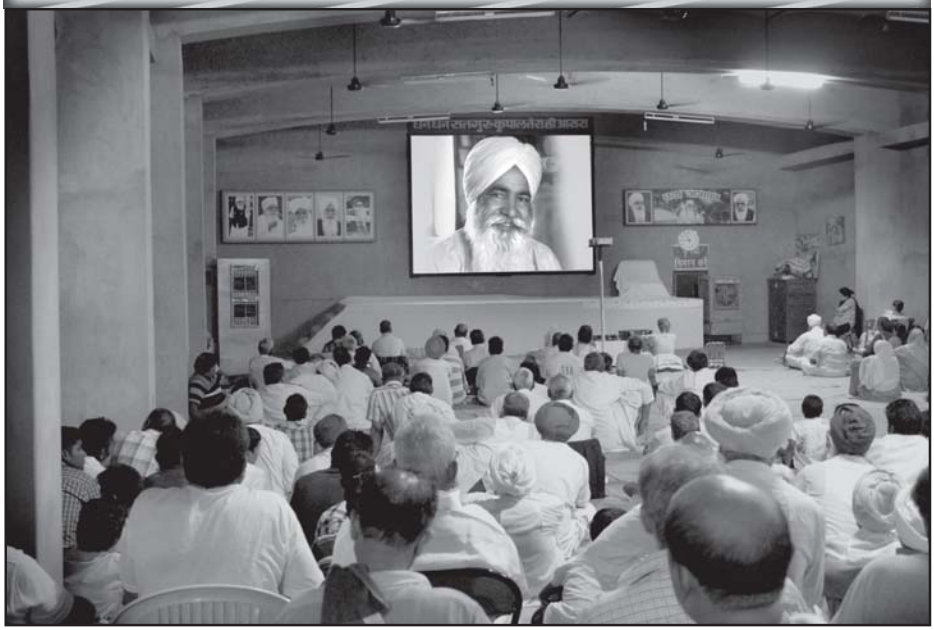

16 पी.एस. राजस्थान आश्रम में सतसंगों के कार्यक्रम :

7, 8, 9, 10 व 11 सितम्बर 2015

23, 24 व 25 अक्टूबर 2015

27, 28 व 29 नवम्बर 2015

25, 26 व 27 दिसम्बर 2015

मुम्बई में सतसंग का कार्यक्रम :

6, 7, 8, 9, व 10 जनवरी 2016